॥ तृतीय अध्याय ॥

** अध्याय तीन **

" अपरा " काव्य संकलन की प्रमुख कविताओं का परिचय।

३.१ जुही की कली

३.२ सन्ध्या सुन्दरी

३.३ छत्रपती शिवाजी का पत्र

३.४ विधवा

३.५ यामिनी जागी

३.६ तोडती पत्थर

३.७ प्रेयसी

३.८ सरोज स्मृति

३.९ राम की शक्ति पूजा

३.१० दान

३.११ बनबेला

३.१२ मरण दृश्य

३.१३ तुलसीदास

३.१४ भगवान बुध्द के प्रति

३.१५ अर्चना

३.१६ सारांश

अपरा काव्य संकलन की प्रमुख कविताओं का परिचय :

अपरा काव्य संकलन में कुल ७८ कवितायें संकलित हैं। इन कविताओं में मुख्यत: सभी कविताये अनेक काव्य संग्रहोंसे चुनी हुई हैं। हर कविता अपना - अपना आकाश प्रस्थापित करती है, जिसमें निराला ने लाखोतारे बसाये हैं। इन कविताओ में आधुनिक युग की काव्य प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। इन कविताओं का रचना काल सन १९१६ से लेकर सन १९५७ तक है। हर एक प्रवृत्ति से दो चार या उससे भी अधिक कवितायें प्रभावित हैं। जैसे की छायावाद से काव्य-संग्रह की बहुतसी कवितायें प्रभावित हैं। इस संग्रह का अध्ययन करने के बाद इसमें से कौनसी कवितायें प्रमुख माने यह एक सवाल था। परंतु बहु चर्चित, सशक्त प्रवृत्तिसे युक्त जो प्रमुख कविता मुझे लगी उसका मैंने प्रमुख कविताओं में चुनाव किया है। मुझे जो भी प्रमुख कविता लगी वह औरो की दृष्टिमें प्रमुख होगी ऐसा मानना उचित नहीं है। फिर भी मेरी अध्ययन दृष्टिसे बदते काल-क्रम से [रचना काल की दृष्टिसे] युक्त तथा प्रवृत्ति मुलक कविताओं का संक्षिप्त परिचय करने का प्रयास आगे किया जा रहा है।

३.१. जुही की कली-सन १९१६ :

निराला का नाम इस कविता के कारण चारो दिशाओं में फैल गया। इस कविता के रचना काल के संबंध में वाद है, मगर निराला ने अपरा में इसका रचना काल सन १९१६ ही लिखा है। अनेक विद्वानों का अनुमाण है कि, यह कविता उनके धर्मपत्नी के देहान्त के बाद लिखी है। इसका तात्पर्य यह है कि, निराला की प्रथम कविता और इतनी प्रौढतम कैसे हो सकती है। निराला की " जुही की कली " तथा जीवन परिचय को पढने के पश्चात ऐसा लगता है कि, उन्होने जीवन के प्रथम चरण में किये हुये प्रगाढ़ अध्ययन का यह एक सुंदर परिचय

है। उनका बाल्य जीवन बंगाल से जुडा हुआ है। मैंने बंगाली साहित्य पढा नहीं मगर बंग प्रदेश से जाने पहचाने जानेवाले कवि टैगोर से निराला परिचित रहे होंगे इसमें कोई शक नही। काव्य के प्रति इनका बाल्य काल से स्वाभाविक आकर्षण था। एन्ट्रेन्स तक पहुँचते पहुँचते उन्होने राजकीय पुस्तकालयसे अँगरेजी, बँगला एवं संस्कृत के अनेक काव्यग्रंथ पढ डाले। गीता और रामायण का भी अध्ययन किया। दर्शन सम्बन्धी भी अनेक पुस्तके पढ डाली। अवधी, ब्रज, संस्कृत में पद लिखने की उन्होने बाल्य काल में कोशिश की थी। इस कविता में जो प्राकृतिक वस्तुओ द्वारा मिलन दर्शाया है, वह उनकी विदुषी पत्नी के संपर्क में सुखद अनुभव से प्रेरित स्फुरित कहानी है। वैसे हिंदी प्रेम की प्रेरणा पत्नी से ही प्रबल हो उठी थी। विशेष कर यह कविता निराला के काव्य जीवन में ऐतिहासिक महत्त्व प्रदान करती है।

" जुही की कली " में प्रकृति के वस्तुओं के बाह्य और आंतरिक सौंदर्य को अति सुक्षम दृष्टी से संजोया है। इस कविता में नायक मलयानिल नायिका " जुही की कली " का मिलन मुख्यत: प्राकृतिक प्रवृत्तिसे युक्त हैं। यह निराला की पहली मुक्त छंद से युक्त कविता है। लौकिक शृंगार के साथ साथ रहस्य भावना को भी भासित किया है। रीति काल में नारी में प्रकृति का वर्णन दृष्टिगत होता था, जब की छायावादी कवियों में प्रकृति में नारी वर्णन, एक विशेषत: है। आत्मा परमात्मा की मिलन योजना कवि के दर्शन संबंधी ज्ञान को ज्ञात कराती हैं।

३.२ सन्ध्या सुंदरी :

सन १९२१ में रचित इस कविता में प्रकृति वर्णन के सुंदर नजारे भरे हुए है। प्रकृति में नारी दर्शन, कोमल कान्त पदावली द्वारा संगीतात्मकता की सृष्टि

मानवीकरण आदि विशेषताओं से युक्त होने से इसे छायावाद की कविता कहना उचित है। प्रकृति वर्णन से युक्त कविता की श्रेणी में भी यह उच्चतर है। निराला की यह मुक्त छंद से युक्त कविता अनेक नव कवियों को प्रेरणा का मंत्र बनी होगी। 'पूर्व युग में बंधी बंधाई कविताओं को मुक्त करने में निराला से जादह और किसी को कष्ट नही सहने पडे होंगे मगर पाँव पर पाँव रखने वाले अनेक नव कविओं को पथ दर्शन रहा, उसमें कोई संदेह नही।

कवि निराला सूरज डूबने के पश्चात पृथ्वी पर चुपके से उतरते हुए संध्या का वर्णन मानवीकृत करता हैं। संध्या की व्यापकता का वर्णन रहस्यात्मक ढंग से किया है, जिससे नारी सौंदर्य को और भी उत्कर्षता आयी है। यह सुंदरी परी जैसी अद्भुत शालीनता लेकर अवतिर्ण होती है। जिसके बालो में एक चमचमता फूल है। पहले प्रहर के बाद कवि मन में अनुराग निर्माण होता है। वह विहाग राग के रूप मे कंठ से प्रसारित होता है। संध्या सारे समस्त प्राणी जगत को मस्ति का प्याला प्रेम पूर्वक पिलाकर चेतना शून्य बनाते हुए अपने गोद में सुलाती है। कवि की सूक्ष्म एवं कलात्मक अभिव्यक्ति इस कविता का विशेष उदाहरण है।

३.३ छत्रपति शिवाजी का पत्र १९२२ :

यह कविता १९२२ में लिखी है। गीति काव्य का एक भेद " पत्र गीति " है। [पत्र गीति का अर्थ है, पत्रात्मक रूप में लिखा गया गीति काव्य] यह पत्र गीत काल्पनिक भी हो सकता है। और ऐतिहासिक भी। शिवाजी ने एक लंबा पत्र हिंदी में अपने विश्वास पात्र कमाजी के हाथो मिर्जाराजा जयसिंग को भिजवाया था। निराला का उद्देश इस कविता द्वारा राष्ट्रीय उद्बोधन तथा

जन जागृति उत्पन्न करने का है। इस कविता का रचना काल देखने से यह समझ में आता है कि अंग्रेजों के साथ जो भारतीय मिले थे, उन पर तीखा व्यंग किया है। कवि अपने लोग अपनों पर अत्याचार करते देखता है तब इस विषय से प्रेरित होता है। परिमल संग्रह से चुनी इस कविता में निराला की राष्ट्रभक्ति का परिचय देती है। कवि भावुक है वह तत्कालीन प्रत्येक घटना से प्रभावित होता है। इस कविता में मुहावरो, लोकोकतियाँ, प्रतीक एवं अनेक अलंकारो का सुंदर प्रयोग किया गया है।

३.४ विधवा :

सन १९२३ में लिखी इस कविता में विधवा का दीन दशा का मार्मिक वर्णन हुआ है। नारी के प्रति कवि का करुण स्वर फूट पडा है। द्विवेदी युग के अन्तिम चरण में नारी दया और श्रध्दा का पात्र थी। जैसे --

" अबला जीवन हाय तुम्हारी कहानी।
अंचल में है दुध और आँखो में पानी॥

-- मैथिली शरण गुप्त

कवि का कहना है कि, भारत की दुर्गति का मुख्य कारण नारी की दुर्दशा। इस प्रकार देश भक्ति और नारी के प्रति सहानुभूति संयुक्त रूप से व्यक्त हुई है। वेदना और संयम का मिला-जुला चित्र विधवा में देखने मिलता है। विधवा को अशुभ मुर्ति के समान अपेक्षित माना जाता था तब उसे "इष्ट देव के मंदिर की पूजा सी " कहना निराला का नारी के प्रति आदरभाव प्रकट करता है। विधवा की उपेक्षा की भावना जादातर नारीयों में है। जिसमें परिवर्तन होना चाहिए यह अपेक्षा निराला की है।

३.५ यामिनी जागी – सन १९२७ :

गीति का काव्यसंग्रह से चुना हुआ यह एक सुंदर गीत है। इस गीत का रचनाकाल सन १९२७ है। इस गीत में मुख्यतः सौंदर्य वर्णन रीति कालीन काव्यशैलीपर लिखा गया है। मानवीकृत प्रकृति पर नारी का आरोपन एक अतीन्द्रियता का आभास स्पष्ट कर देता है। कवि का सूक्ष्म निरीक्षण इस गीत में नायिका की सौंदर्य वर्णन में द्रष्टव्य है। प्रकृति में नारी दर्शन तथा प्रकृति पर चैतन्यारोपन हुआ है। सौंदर्य चित्र में वासना की मुक्ति का संदेश है। फिर भी महाकवि निराला का नारी के प्रतिदृष्टिकोण स्वस्थ एवं निर्लिप्त है। निराला का इतना सुंदर सौंदर्य वर्णन इस काव्य संकलन में दुर्लभ है।

३.६ तोडती पत्थर – सन १९३५ :

इस कविता का रचना काल सन १९३५ है। निराला मानवतावादी कवि थे अतः उनमें मानवता कुट कूट कर भरी हुई थी। आम जनता के कष्ट तथा दुःखो को देखकर वे अस्वस्थ हो जाते थे। इस कविता में एक ओर शोषक दूसरी ओर शोषित का चित्रन कवि व्यंग्यात्मक ढंगसे करता है। १९३६ से प्रगतिवादी काव्यधारा का उद्भव हुआ परंतु उससे भी पहले निराला ने प्रगतिवादी कविताओं की रचना कर ली थी। इस कविता में समाज में जो विषम अर्थव्यवस्था का भयानक तथा विद्रुप चित्र है वही इस कविता में खींचा है।

एक भारी हाथोडा लेकर मजदुरनी छायाविरहीत पेड के नीचे तेज धुप और गर्म हवा में बिना विश्राम किए पत्थर तोडती है, ऐसे विषयों को लेकर कविता लिखना ही निरालाजी की मानवतावादी दृष्टिकोण को बताता है। कवि जब उस काले रंग की जवान युवती को देखता है तब वह पसीने से लथपथ

12818
A

होकर कवि की ओर एक कटाक्ष और महलों की ओर एक कटाक्ष फेंकती है। कवि ने इस महिला के चित्रण से मजदूरों की पिडा एवं विवशता को दिखाकर इसे धनिक वर्ग और परिस्थिति कारण मानते हैं। यह एक प्रगतिवादी कविता है। जिसमें मार्क्सवादी विचार तो विद्यमान हैं। परंतु कवि हृदय से मानवता-वादी विचार रखते हैं।

३.७ प्रेयसी - सन १९३५ :

द्वितिय अनामिका से चुनी हुई यह कविता प्रेम के उद्भव एवं विकास का सूक्ष्म चित्रण चित्रित करती है। यह एक छायावादी कविता है, जिसमें सौंदर्य और प्रेम की अभिव्यक्ति सशक्त है। हर एक मनुष्य के जीवन में यौवनावस्था आता है, हर एक मनचाहा साथी पाने का सपना सजता है। जब मनचाहा साथी मिले और दोनो में सम आकर्षण उत्पन्न हो जाये तब प्रेम किया नही जाता, हो जाता है। इस कविता में कवि ने अधिक मांसल वर्णन किया है। इस संदर्भ में डॉ. गोकाकर तथा कुलकर्णीजी का एक संयुक्त मत इस कविता पर विशेष दृष्टि प्रदान करता है - " प्रेयसी कविता में कवि प्रेम भावना का विकास वर्णित है। प्रेम वर्णन में अन्य छायावादी कवियों के समान मांसलता नही प्राप्त होती है। उसके स्थान पर एक दिव्य संकेत परिव्याप्त है। " [१]

प्रेम की सही लक्षणों को इस कविता में अभिव्यक्ति मिली है। जिज्ञासा आकर्षण विरह मिलन आदि के सूक्ष्म चित्रणों का वर्णन हुआ है। आत्मा के मुक्ति का संयोजन निराला के अध्यात्मिक विचारों का प्रभाव। कविता की महत्वपूर्ण बात यह है आत्म कथात्मक शैली जैसी लगती है।

३.८ सरोज स्मृति - सन १९३५ :

जादातर भावुक व्यक्ति बहिर्मुखी होते है, वह अपनी मन की बातों को

कभी छुपाते नहीं। प्रतिभा संपन्न कवि निराला एक भावुक इन्सान है तथा वे हर एक घटनाओं को यु नहीं भूल जाते, अक्सर उस घटना को काव्य में बिठाने में सफल हुए हैं। इस कारण उनके कविताओंमे अनन्य विषय मिलते है। इस कविता में सरोज के व्यक्तिमत्व के अमर निराला नजर आते हैं। सरोज निराला की एकलौती प्रिय पुत्री थी। साहित्य संघर्ष, अर्थ संघर्ष तथा अनेक अपत्तियों से युक्त निराला का जीवन रहा। ऐसी हालत में निराला उपनी पुत्री का इलाज करने में अक्षम रहे। हिंदी साहित्य जगत में निराला जैसे कवि दुर्लभ तो है ही मगर पुत्री के यौवनाअवस्था का हुं - ब - हु वर्णन करनेवाले कवि मिलते ही नही। हिंदी साहित्य को कवि निराला ने बहुत कुछ दिया है, मगर साहित्य प्रेमी, साहित्य दलो एवं साहित्य विद्वानों ने उन्हे डगर डगर पर ठोकर ही दी है। डॉ. दुधनाथ सिंह अपने " आत्महन्ता आस्था " शोध ग्रंथ में कहते हैं कि " जरूर कवि अर्ध विक्षेप के नरक में उतर गये होंगे। " [२]

इस कविता में कवि के तीन भाव मुखरित है - विद्रोह, वात्सल्य एवं निराशा। इस शोक गीत में कविनराला ने जीवन के कटु सत्य तथा प्रिय पुत्री सरोज के प्रति आदम्य प्रेम को शाब्दबध्द किया है। कवि की विषय विवरण क्षमता अधिक होने के कारण सरोज मृत्यू यह विषय स्मृति श्रध्दांजली न रहकर स्वंय की आत्मकथा से जुडकर तत्कालिन सभी परिस्थितियों से स्पर्श करते हुये कथासूत्र में बँधा है। कविता में भाषा प्रवाहमयी है। पूर्व घटनाओं पर आधारित इस शोक गीत को स्मृतिशैली कह सकते है। कोमलकान्त संगीतपूर्ण एवं ध्वन्यात्मक पदावली का प्रयोग हुआ है। शैली लाक्षणीक है। निराला के साहित्य में यह कविता उच्च स्थान रखती है, रचनाकाल १९३५ है।

३.९ राम की शक्ति पूजा - इस १९३६ :

सन १९३६ में लिखी निराला की एक लंबी कविता है। इस कविता का

विषय रामायण की राम रावण युध्द कथा से मिलता है। मगर इस कविता में जो राम ने शक्ति पूजा की है उसका इतना विस्तृत विवेचन वाल्मिकी रामायण में तथा रामचरित मानस में नही है। इसका प्रेरणा स्त्रोत और विषय चयन बंगाल के कृतिवास की रामायण से मिलता है। हम व्यक्तित्व में देख चुके है कि निराला पर बंग भुमि तथा बंग साहित्यिक विचारों का प्रभाव रहा है। इस संदर्भ में डॉ. मानवजी का मत इस प्रकार " कृतिवास की बंगला रामायण को उलठ पलट कर देखा तो पूरे विस्तार के साथ वहाँ यह प्रसंग मिल गया। " [3] अब इस कविता की इतनी मौलिकता जरूर है क्योंकि निराला के रचनात्मक जीवन संघर्ष के बीच इतनी क्षमता से इसने जन्म लिया है। कवि राम रावण युध्द कथा से अपने संघर्ष और संशय का भोगचित्र जुडाकर शक्ति पूजा याने आशा, विश्वास, निष्ठा, तथा कर्म की पूजा चाहते हैं।

इस कविता की अनेक विशेषतायें हैं। यह कविता छायावादी काव्य प्रवृत्तियों से पूर्ण है। भाषा में ध्वन्यात्मकता, ओज गुण, सामासिक तत्सम, शब्दावली संस्कृत निष्ठ भाषा, बिम्ब योजना, भाव प्रवणता आदि के प्रयोजन हुये हैं। वीर, वात्सल्य तथा भयानक रसों की व्यंजना हुई है। कई जगह प्रकृति द्वारा भावाभिव्यक्ति प्रस्फुटित हुई है।

कविता की मध्यवर्ती कल्पना इस प्रकार है – राम तथा रावण का युध्द शुरू था। राम के अस्त्र कमजोर साबित होने लगे थे, इस कारण राम की युध्द सेना में एक चिंता तथा भय का वातावरण फैल गया। महाशक्ति रणचंडी दुर्गा रावण पर प्रसन्न थी, इस कारण राम के अस्त्र असफल लौटते थे। जांबवंत राम को शक्ति पूजा का उपाय बताते हैं। इस पूजा में १०८ निलकमल महत्वपूर्ण थे जो महाबली हनुमंत ले आये। पूजा के समय शक्तिमाता राम की परीक्षा

लेती है। माता उन कमलोमें से एक कमल चुराती है। पूजा असफल न हो इस वास्ते भक्त राम अपने दो नयनों में से एक को अर्पण करना उचित समजते है। इसका कारण यह कि, माता कौशाल्या राम को राजीव नयन कहती थी। जब राम आखरी निलकमल के बदले अपनी एक आँख को निकालने के लिये आँख की तरफ धनुषबाण बढाता है, तब माता प्रसन्न होकर उसे शक्ति प्रदान करती है। यही कथा निराला ने अपने काव्य में विस्तार पूर्वक प्रकट की है।

३.१० दान - सन १९३५ :

इस कविता में भारतीय समाज के उच्च वर्ग में तथा मध्यम और कनिष्ठ वर्ग में प्रचलित धर्मपूजा और दानशिलता का खोकलापण दिखाया हैं। कवि की व्यंग दृष्टि ने इस सामाजिक कुरीति का पोल खोला है। इसमें विषय वस्तु के सार्थ कथन शैली का व्यंग्य अत्यंत तीव्र है।

निराला के विचारोंमें यह धार्मिक पाखंड ही हमारी अज्ञानता, निष्क्रीयता, सामाजिक विषमता और सांस्कृतिक पतन का कारण है। जबतक मनुष्य को मनुष्य के प्रति समवेदना उत्पन्न न हो तब तक अपनी संस्कृति और सभ्यता पर गर्व करना कोई मायने नही रखता। निराला की इस कविता में व्यंग्य में करुणा एवं मानवता की भावना सशक्तता से अभिव्यक्त हो उठी है। इस कविता पठन से निराला की परीक्षण दृष्टि और आत्मीय भावविवशता का पता लग सकता है।

३.१२ बनबेला - सन १९३७ :

इस कविता का रचनाकाल सन १९३७ है। कवि निराला इस कविता में मन के उतार चढाव के अनुरूप व्यक्त शैली में भिन्न भिन्न नजर आते हैं। कवि

मन के पूर्वत्तर विचारों मे उनकी छायावादी कालीन कलारूप का स्वरूप दिखाई देता है, जिस में पृथ्वी और सूर्य का प्रणय चलता है। कविता के मध्य में यथार्थवादी जैसे प्रगतिवादी कालीन कलारूप का व्यंग्य एवं चोट करनेवाला काव्य विषय प्रधान है, जो आक्रोश व्यक्त करता है। अंत में कवि एक अध्यात्मिक एवं दार्शनीक की तरह एक विशाल मनोदशा गंभीरता पूर्वक व्यक्त करते हैं।

कविता के प्रथम छंदो में प्रकृति का आलंबन रूप में वर्णन है, अत: मानवीकरण पध्दति है। प्रकृति में नारी का दर्शन, कोमलकान्त पदावली में संगीतात्मकता निजी जीवन की निराशा छायावादी शैलीमें प्रकट करते है। कविता की मध्य में पूँजीवादी व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य करता है। पत्रकारों तथा नकली समाजवादियों की अच्छी खबर ली है। कविता के अंत में निराला का उपदेश महत्त्वपूर्ण है, बढती हुई भौतिकता के प्रति समाज को सचेत किया है, तथा नागरिक जीवन के कृत्रिम जीवन के प्रति तीखा व्यंग्य किया है।

३.१३ मरण दृश्य - सन १९३९ :

इस कविता की मध्यवर्ती कल्पना इस प्रकार है, कवि मृत्यू को मुक्ति मानता है, क्योंकि, वह सांसारिकता से छुटकारा देती है। मृत्यू के सम्बन्ध में कवि का दार्शनिक चिन्तन अभिव्यक्त है। यहाँ कवि जीवन से भागते हुये चित्रित होते हैं मगर व्यक्तित्व से ऐसा नहीं लगता। कोमलकान्त पदावली, लाक्षणिक शैली तथा शृंगारिकता आदि छायावादी विशेषताएँ दृष्टव्य हैं।

३.१४ तुलसीदास - सन १९३८ :

इस रचना में औदात्य गरिमा तथा काव्य कला की विशेषताओं का परिष्कार हुआ है। सौ छंदो के इस खंडकाव्य से अंतिम सत्तरह छंद "अपरा "

काव्य संकलन में लिये गये हैं। इतनी काटछाट के बाद भी इस खंडकाव्य की गरिमा कम नहीं होती।

" तुलसीदास " इस काव्य खंडका कथानक कवि तुलसीदास के जीवन से संबधित एक किंवदंती पर आधारित है। कथा का आधार सूक्ष्म है। इतिहास, युग दार्शनिकता इन तीन पहलुओं पर आधारित तुलसीदास के मन में अंतरद्वंद्व दिखाया है, जिस में संस्कृति संस्कार की गरिमा और महात्म्य बनाये रखने का प्रयास किया है।

" तुलसीदास " की मध्यवर्ती कल्पना इस प्रकार है। कामाभिभूत तुलसी-दास बिन बुलाये मेहमान की तरह पत्नी के ससुराल पहूँचता है। तब तुलसीदास की पत्नी रत्नावली दु:खीत एवं क्रोधित होकर तुलसीदास को रोष पूर्ण कटूक्तियाँ से पेश आती है। जिस से तुलसीदास के जीवन में लाक्षणिक परिवर्तन स्विकार करके सत्यशोध की ओर अग्रेसित होता है।

" तुलसीदास " निराला की एक सुंदर कविता है, जिसमें भारतीय संस्कृति के उध्दारक के रूप में तुलसीदास चित्रित हुये है। कवि भौतिक वाद की तुलनामें अध्यात्मवाद के समर्थक रहे। तथा प्रथमत: रत्नावली द्वारा अज्ञान का ज्ञान से संघर्ष दिया है। कविता की रचना काल दौरान भारत अंग्रेज, शासकों की पंजो मे जखडा था तब भारतियों में सपने तो थे मगर मन में उदासिनता, क्रोध तथा आंदोलन की भावनाओं का बोझ था। इन दिनों भारतिय संस्कृति का गुण गान फैलाना, कवि का उद्देश था।

३.१५ भगवान बुध्द के प्रति – सन १९४० :

कवि निराला सन १९४० में विश्व भर की खबरे सुनकर मानव विकास पर सोच प्रकट करता है। मानव विज्ञान की उन्नती को देखकर आनंदित होता है,

परंतु कवि निराला विज्ञान को संदेह दृष्टि से देखते है। वे कहते हैं, विज्ञान द्वारा उपलब्ध सुख समृध्दी के साधन आज मनुष्य के लिये खिलोने बने हैं, मगर स्पष्ट है वह विनाश की ओर निरंतर बढता ही जा रहा है। कवि मानव सभ्यता पर विचार करता है। गौतम बुध्द ने अष्ट सुत्रीय मार्ग [मध्यम मार्ग] बताकर अज्ञान तथा दु:ख को दूर करने का उपाय बताया है। इस कविता का व्यंग्यार्थ यह है कि, गौतम बुध्द द्वारा प्रतिपादित अष्टसूत्रिय मार्ग अवलंब करने से मानव सुख शांति का अनुभव कर सकता हैं। इन विचारों की प्रेरणा महात्मा गांधी के अंहिसावादी तत्व से प्रेरित है यह स्पष्ट होता है।

३.१६ अर्चना – सन १९४९ से १९५७ :

अपरा काव्य संकलन में यह अंतिम रचना है। अत: इसमें पाँच गीतो कीं योजना है, जिनके कालक्रम में अंतर है। प्रथम गीत की रचना तिथि १७/१/१९५७ है, जिस में कवि निराला सूर्य से प्रार्थना करके मंगल की अपेक्षा व्यक्त करते हैं। द्वितीय गीत में वसंत का आगमन का सुंदर वर्णन करते हैं, जिसका रचनाकाल १५/१/१९५० है। तृतीय गीत में अपने प्रेयसी से स्मृतिसंचारी भावों की माध्यम से चर्चा करते हैं इसकी रचना तिथी १३/१/१९५० है। चतूर्थ गीत में कवि भगवान से सहाय्यता की याचना करते हैं। कवि विपत्ति में फँसे हैं, जो अब मुक्ति चाहते हैं। पंचम गीत में रहस्यवाद का प्रभाव है क्योंकि, " नाचुक तहाते शामा"की भाँति विषय विवरण दिखाई पडता है। पाँचो गीतों में अलग अलग प्रकार के विषयों को निराला ने आयोजित किया है। जिससे निराला की बहुमुखी प्रतिमा परिलक्षित होती है।

३.१६ सारांश :

निराला की कविताओं में अनेक मनोभाव व्यक्त हुए हैं। वे अनेक स्तर की कवितायें एक साथ लिखते हैं। कवि का व्यक्तित्व, उनका सुख – दु:ख,

उदासी – अवसाद एक स्तर पर व्यंजित हुआ हैं। उनकी कविताओं में सांस्कृतिक उनमेश संवेदना तथा अनुभूति के भाव सदैव रहते हैं। निराला सदैव प्रकृति को मानवि परिस्थिति से अभिन्न रूप में माना है, इसीलिए उनके इस संकलन की अनेक कविताओं मे मानवीकरण की पध्दति अधिक है। अत: इसके सुंदर उदाहरण " जुही की कली ", बनबेला", तथा " संध्यासुंदरी" आदि कविताओं में विद्यमान है।

निराला प्रेम गीतों में निरंतरता कायम रही। प्रेम के गीतों में आंतरिक सघनता के साथ सुख की तन्मयता व्यक्त हुई है। वैसे प्रेयसी में प्रेम का स्वच्छंद रूप स्मृति में शांत और पवित्र अनुभूति में व्यंजित करते हैं। निराला की प्रेम की अभिव्यक्ति उनके जीवन के अनुभवो से जुड़ी है। प्रेम सांसारिक असफलता, निराशा और अवसाद से मुक्त करके जीवन को सार्थकता प्रदान करता है।

कवि विरोध एवं संघर्ष को झेलकर सर्जन क्षमता के प्रति निरंतर विश्वास रखते है। अनेक कविताओं में सर्जन संघर्ष के अनेक पक्षों को बहुत ही मार्मिकता के साथ प्रस्तुति मिली है। कुछ कविताओं में बाहरी और भीतरी संघर्ष प्रधान है, वहाँ कवि का निराशा भाव मुखर रहा है। पराजय अवहेलना व्यर्थता के भाव अनेक कविताओं में विद्यमान है। " मैं अकेला "," स्नेह निर्झर बह गया " आदि कविताये इस स्तर में आती है। अपरा काव्य संकलन में कवि अनेक प्रार्थनाएँ संकलित करते है, वहाँ वे स्वंय को प्रभु चरण में प्रणत भाव से पेश आते हैं।

" जागो फिर एक बार ", "छत्रपति शिवाजी का पत्र ", "भारती वंदना", " सहस्त्रब्दि" आदि अन्य कविताओं में राष्ट्रीयता नजर आती है। समाज उद्बोधन जिसमें देश के स्वाधीनता की आंकाक्षा मुख्य उद्देश है।

सांस्कृतिक उत्थान एवं समाज परिवर्तन की प्रेरणा इनके कविताओं में है।

" सरोज स्मृति", " छत्रपति शिवाजी का पत्र ", "राम की शक्ति पूजा ", तथा " तुलसीदास " आदि लंबी कवितायें है, जिनमें कवि कथासूत्र आयोजित करते हैं।

"बनबेला", "तोडती पत्थर", "भिक्षुक", "दान", "विधवा", आदि कविताओं में कवि समाज के दायित्व क्या है, इसपर प्रकाश डालते हैं इन कविताओं में उपेक्षितो एवं शोषितो के प्रति गहरी संवेदना रही हैं।

इस संकलन में चुनी हुई कविताओं से मुख्य कविताओ को एकत्रित करके उनका संक्षेप में परिचय दिया है। इसमें उन कविताओं को लिया जिसमें एकाध प्रवृत्ति अधिक प्रबल या सशक्त है। निराला एक बहुमुखी कवि है, अत: उनके काव्य जीवन काल में वे जिन काव्यधारा युगों से गुजरे हैं उनसे वे प्रभावित रहे हैं ऐसी बात नहीं हैं। मगर उनमें उन धारा से मिलती जुलती कविता या तो पूर्वोत्तर युग में मिलती है या बाद में। उदाहरण स्वरूप छायावाद के काल में उनकी प्रगतिवादी विशेषताओं से पूर्ण कविताएँ मिलती हैं, तथा प्रगतिवादी काव्यधारा काल में छायावादी और प्रयोगवादी रचनाएँ मिलती हैं। जिससे हम यह कह सकते हैं कि कवि भावुक है प्रभावग्रही है परंतु सिर्फ काव्य विषयों से काव्यधारा से नहीं। उनका पूरा काव्यसाहित्य पठन करने से यह ध्यान में आता है उनमें छायावाद प्रवृत्ति अधिक सशक्त है।

-: अध्याय तीन :-

पाद टिप्पनी - [संदर्भ सुची]

पृष्ठ

१. डॉ. गोकाककर - कुलकर्णी : निराला : साहित्यिक मुल्यांकन १८३

२. दूधनाथ सिंह : निराला आत्महंत आस्था ५

३ डॉ. विश्वम्भर "मानव" : काव्य का देवता "निराला " २०४